सहभागी प्रेक्षण तथा असहभागी प्रेक्षण में अन्तर ***(Difference between participant observation and non-participant observation)***

सहभागी प्रेक्षण तथा असहभागी प्रेक्षण में प्रमुख समानता यह है कि ये दोनों ही स्वाभाविक परिस्थितियों में किए जाते हैं। फिर भी इन दोनों में कुछ अन्तर है जो निम्नांकित है—

(i) सहभागी प्रेक्षण विधि (participant observation method) में प्रेक्षक (observer) व्यक्ति के क्रिया-कलापों (activities) में सक्रिय भाग लेता है जबकि असहभागी प्रेक्षण में वह व्यक्तियों के इन क्रिया-कलापों में हाथ नहीं बँटाता है और निष्क्रिय रूप से वह इन क्रियाओं का प्रेक्षण करता है।

(ii) सहभागी प्रेक्षण में प्रेक्षक (observer) का परिचय प्रायः छिपा रहता है परन्तु असहभागी प्रेक्षण में प्रायः प्रेक्षक व्यक्तियों के बीच बैठकर उनके व्यवहारों का प्रेक्षण करता है। अतः, उनका परिचय छिपा होने का प्रश्न ही नहीं उठता है। हाँ, कुछ मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में जिसमें असहभागी प्रेक्षण की विधि तो अपनाई गयी है परन्तु साथ-ही-साथ प्रेक्षक एक-तरफा शीशा (one-way glass) के पीछे छिपा रहता है जहाँ से वह सभी व्यक्तियों के व्यवहारों का तो प्रेक्षण करता ही परन्तु इसे कोई नहीं देख पाता है।

(iii) सहभागी प्रेक्षण (participant observation) असंगठित या असंरचित (unstructured) होता है जबकि असहभागी प्रेक्षण संगठित या संरचित (structured) होता है।

(स) वर्गीकरण व्यवस्था तथा रेटिंग व्यवस्था ***(Category system and Rating system)***

वर्गीकरण व्यवस्था विधि (category system method) प्रेक्षण (observation) का एक प्रमुख प्रकार है। इस विधि में प्रेक्षणकर्त्ता (observer) व्यक्तियों के व्यवहारों को विभिन्न वर्गों (categories) में बाँटते हुए उसका अभिलेखन

Scanned with CamScanner

(record) करता है। किसी भी अध्ययन में वर्गीकरण व्यवस्था (category system) का स्वरूप (nature) क्या होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि शोध समस्या (research problem) क्या है तथा उसका स्वरूप क्या है? वर्गीकरण व्यवस्था (category system) के स्वरूप से तात्पर्य वर्गों (categories) के प्रकार (kinds), वर्गों की संख्या (number), विभिन्न तरह के व्यवहारों के अध्ययन में उन वर्गों की उपयोगिता की सीमा (extent) आदि से होता है। जब प्रेक्षण (observation) विभिन्न वर्गों (categories) में बाँटकर किया जाता है, तो इसका एक महत्त्वपूर्ण फायदा यह होता है कि इससे प्रेक्षण किये जाने वाले व्यवहार से सम्बन्धित सभी पहलुओं का अभिलेखन (recording) हो जाता है। फलतः प्रेक्षण (observation) से प्राप्त परिणाम (results) भी निर्भर योग्य (dependable) होते हैं।

अनेक मनोवैज्ञानिकों ने वर्गीकरण व्यवस्था (category system) द्वारा मानव व्यवहारों का प्रेक्षण कर अपने शोध समस्या का अध्ययन किया है। सबसे मशहूर एवं प्रचलित वर्गीकरण व्यवस्था (category system) बेल्स (Bales, 1950) द्वारा विकसित किया गया। इसका प्रयोग बेल्स (Bales) ने समूह व्यवहार (group behaviour) के अध्ययन करने के लिए किया था। बेल्स के वर्गीकरण व्यवस्था में कुल 12 वर्ग (category) हैं। प्रेक्षक को इन वर्गों को पहले ही याद कर लेना होता है ताकि जब वे समूह व्यवहार का अध्ययन करने बैठे तो वे प्रत्येक व्यक्ति के व्यवहार को झट से किसी उपयुक्त (appropriate) वर्ग में डाल दें। बेल्स (Bales) द्वारा प्रतिपादित 12 वर्गों को तालिका 9.1 में दिखलाया गया है। इन 12 वर्गों को बेल्स (Bales) ने चार प्रमुख क्षेत्रों (areas) में समूहन किया है—सांवेगिक धनात्मक अनुक्रिया (emotionally positive response) जिसमें क्रम संख्या 1 से 3 तक की क्रियाएँ आती हैं; समस्या समाधान अनुक्रियाएँ: उत्तर (problem-solving responses : answer) जिसमें क्रमसंख्या 4 से 6 तक की क्रियाएँ आती हैं; समस्या-समाधान अनुक्रियाएँ : प्रश्न (Problem solving response : question) जिसमें क्रमसंख्या 7 से 8 तक की अनुक्रियाएँ आती है

तालिका 9.1 : बेल्स द्वारा प्रतिपादित वर्ग व्यवस्था

(Category system proposed by Bales)

1. Shows solidarities	7. Asks for orientation
2. Shows tension release	8. Asks for opinion
3. Agrees	9. Asks for suggestions
4. Gives suggestion	10. Disagrees
5. Gives opinion	11. Shows tension
6. Give orientation	12. Shows antagonism

तथा सांवेगिक ऋणात्मक अनुक्रियाएँ (emotionally negative responses) जिसमें क्रमसंख्या 10 से 12 तक की क्रियाएँ आती हैं। बेल्स (Bales) द्वारा प्रतिपादित इस वर्गीकरण व्यवस्था (category system) को **अन्तःक्रिया प्रक्रिया विश्लेषण** (Interaction Process Analysis) की संज्ञा दी गई है। बेल्स के इस वर्गीकरण व्यवस्था (category system) की सफलता से प्रभावित होकर फलैण्डर्स (Flanders, 1970) ने अंतःक्रिया प्रक्रिया विश्लेषण का प्रयोग शिक्षक एवं छात्र के बीच वर्ग में होनेवाली अन्तःक्रियाओं (interactions) के विश्लेषण में किया है। फलैण्डर्स (Flanders) द्वारा प्रतिपादित अन्तःक्रिया प्रक्रिया विश्लेषण (Interaction Process Analysis) में कुल 10 वर्ग (categories) हैं जिन्हें तालिका 9.2 में दिखलाया गया है।

तालिका 9.2 से स्पष्ट है कि फलैण्डर्स ने 10 वर्गों को मूलतः दो भागों में बाँटा है—शिक्षक वार्ता (Teacher talk) तथा छात्र वार्त्ता (Student talk)। दसवाँ वर्ग खामोशी (Silence) या संभ्राति (Confusion) का है जिसमें उन क्षणों (moments) को रखा जाता है जब वर्ग में शिक्षक या छात्र दोनों चुप हो जाते हैं या उनके अन्तःक्रियाओं (interactions) में कुछ संभ्रांति (confusion) में उत्पन्न हो जाता है। शिक्षक वार्ता (teacher talk) को पुनः दो समूहों में बाँटा गया है—प्रत्यक्ष प्रभाव (direct influence) तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव (indirect influence)। एक प्रशिक्षित प्रेक्षक (trained observer) वर्ग में बैठकर शिक्षक-छात्र में चल रहे अन्तःक्रियाओं (interactions) को उन्हें दस वर्गों में बाँटते हुए अभिलेखन (recording) करता जाता है।

तालिका 9.2 : फलैण्डर्स द्वारा प्रतिपादित वर्ग व्यवस्था

(Category system proposed by Flanders)

Teacher Talk शिक्षक वार्ता	अप्रत्यक्ष प्रभाव	1. Accepts feeling 2. Praises or Encourages 3. Accepts or Uses ideas of students 4. Asks questions
	प्रत्यक्ष प्रभाव	5. Lecturing 6. Giving direction 7. Criticising or Justifying authority
Student Talk छात्र वार्त्ता		8. Student talk-response 9. Student talk-invitation
		10. Silence or confusion

वर्गीकरण व्यवस्था विधि (category system method) का महत्त्वपूर्ण लाभ यह है कि इस विधि द्वारा शोध समस्या (research problem) के बारे में संग्रह किये गये आँकड़े (data) अधिक विश्वसनीय (reliable) होते हैं। परन्तु दोष यह बतलाया गया है कि यह एक खर्चीला (costly) तथा अधिक समय एवं श्रम लेनेवाली विधि है।

रेटिंग व्यवस्था (rating system) एक-दूसरे प्रकार की प्रेक्षण विधि है जिसके द्वारा भी मनोविज्ञान, शिक्षा तथा समाजशास्त्र की शोध समस्याओं (research problem) के बारे में महत्त्वपूर्ण आँकड़ों (data) को संग्रहण किया जाता है। रेटिंग मापनी (rating scale) का प्रयोग इन विज्ञानों (sciences) में सर्वाधिक किया जाता है जिसके दो महत्त्वपूर्ण कारण बतलाये गये हैं। पहला कारण तो यह है कि रेटिंग मापनी का निर्माण काफी आसान होता है तथा दूसरा कारण यह है कि रेटिंग मापनी द्वारा शोध समस्या के बारे में आँकड़े (data) संग्रह करने में काफी कम समय लगता है। *रेटिंग मापनी की महत्ता (importance) को देखते हुए इसका वर्णन हम विस्तारपूर्वक अगले अनुच्छेद (section) में करें अलग करेंगे।*

प्रेक्षण विधि की उपयोगिता एवं लाभ
(Utility and Advantages of Observation Method)

प्रेक्षण विधि के कुछ खास-खास विशेष उपयोगिताएँ हैं जिनसे लाभान्वित होकर शोधकर्त्ता उसके प्रयोग के लिए लालायित रहता है। कुछ ऐसे ही प्रमुख उपयोगिताओं एवं लाभों का वर्णन इन शब्दों में किया जा सकता है—

(i) प्रेक्षण विधि में व्यक्तियों के व्यवहारों, घटनाओं एवं वस्तुओं को ठीक उसी रूप में अध्ययन किया जाता है जिस रूप में वह अवतरित होता है। इसक विशेष लाभ यह होता है कि इस विधि द्वारा संग्रह किये गये आँकड़ों में विश्वसनीयता (reliability) अधिक होती है तथा फिर शोध समस्या के बारे में लिया गया अन्तिम निष्कर्ष भी अधिक वैध (valid) होता है। आँकड़े संग्रह करने की अन्य विधि जैसे साक्षात्कार विधि (interview method), प्रश्नावली विधि (questionnaire method) में इस ढंग की सुविधा प्राप्त नहीं है।

(ii) इस विधि द्वारा शिशुओं एवं पशुओं के व्यवहारों का अध्ययन करने में विशेष सुविधा होती है। चूँकि पशु एवं शिशु अपनी मनोवृत्तियों एवं इच्छाओं को ऐसे स्पष्ट शब्दों में बोलकर व्यक्त नहीं कर पाते हैं जिसके आधार पर कोई स्पष्ट अर्थ निकाला जा सके, अतः इनके व्यवहारों को मात्र प्रेक्षण (observation) करके ही समझा जा सकता है तथा उससे कोई अर्थपूर्ण व्याख्या की जा सकती है। अनेक शोध वैज्ञानिकों (scientists) ने इस विधि का प्रयोग बच्चों एवं पशुओं के व्यवहारों में सफलतापूर्वक किया है। स्पिट्ज तथा वोल्फ (Spitz & Wolf, 1946) द्वारा बच्चों पर तथा हारलो (Harlow, 1951) द्वारा बन्दरों पर किये गये अध्ययन इसके विशेष उदाहरण है।

(iii) प्रेक्षण विधि द्वारा हम उन व्यक्तियों के भी व्यवहारों का अध्ययन कर सकते हैं जो प्रेक्षक की भाषा नहीं जानते है। जैसे; यदि प्रेक्षक को ऐसे विदेशियों (foreigners) के व्यवहारों का अध्ययन करना है जो उनकी भाषा नहीं जानते हैं, तो इस विधि द्वारा आसानी से उनके व्यवहारों का अध्ययन किया जा सकता है।

(iv) प्रेक्षण विधि का उपयोग उन परिस्थितियों में भी आसानी से किया जाता है जहाँ व्यक्ति शोध समस्या के बारे में कुछ उत्तर देने के लिए तैयार न हो या व्यक्तियों को यह भय बना रहता है कि उत्तर देने से उसका नाम भी उसके साथ छाप दिया जायेगा या लोग उसे निम्न स्तर का समझेंगे। ऐसी परिस्थितियों में व्यक्तियों के व्यवहार का प्रेक्षण (observation) करके ही शोधकर्त्ता आसानी से एक निष्कर्ष पर पहुँच सकता है।

(v) प्रेक्षण विधि का प्रयोग विभिन्न शोध उद्देश्यों (research purposes) के लिए किया जाता है। जैसे, प्रेक्षण विधि का प्रयोग अन्य विधियों से संग्रह किये गये तथ्यों एवं आँकड़ों (data) की पुष्टि के लिए की जाती है। कुछ लोगों ने इस प्रेक्षण विधि का प्रयोग प्रयोगशाला परिस्थिति (laboratory situation) तथा जिन्दगी की वास्तविक परिस्थिति में आँकड़े संग्रह करने के लिए भी किया है।

(vi) प्रेक्षण विधि (observation method) में सरलता (simplicity), विश्वसनीयता (reliability) तथा सत्यापन (verification) की सुविधा होती है, अतः इस विधि की उपयोगिता का क्षेत्र अन्य विधियों की उपयोगिता के क्षेत्र से अधिक विस्तृत है।

प्रेक्षण विधि की परिसीमाएँ (Limitations of Observation Method)

यद्यपि प्रेक्षण विधि का प्रयोग शोध समस्याओं के बारे में आँकड़े संग्रह करने में काफी किया गया है, फिर भी इस विधि की कुछ परिसीमाएँ (limitations) हैं जिनके कारण इस विधि के प्रयोग में काफी सतर्कता बरतने की जरूरत होती है। प्रमुख परिसीमाएँ (limitations) निम्नांकित हैं–

(i) प्रेक्षण विधि (observation method) की सबसे प्रमुख परिसीमा (limitation) यह बतलाया गया है कि इस विधि द्वारा प्राणी के उन व्यवहारों का अध्ययन नहीं किया जा सकता है जो आन्तरिक है या जो बाह्य रूप से दर्शनीय नहीं है। जैसे, प्राणी के भावनाओं (feeling), संवेदनाओं तथा व्यक्तिगत विचारों का अध्ययन इस विधि द्वारा सम्भव नहीं है क्योंकि ये सभी बाह्य रूप से दर्शनीय नहीं है, अर्थात् वे आन्तरिक हैं।

(ii) प्रेक्षण विधि में सामान्यतः प्रेक्षक यह कोशिश करता है कि वह घटनाओं या व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन एक स्वाभाविक परिस्थिति (natural setting) में करें। इसके लिए इस स्वाभाविक परिस्थिति के अपने-आप उत्पन्न होने के लिए इन्तजार करना पड़ता है और चूँकि इस इन्तजार की घड़ी अनियत (indeterminable) होती है, इसलिए प्रेक्षक का धैर्य (patience) और अभिरुचि (interest) दोनों ही समाप्त होता दिखता है। उदाहरणार्थ, यदि कोई शोधकर्त्ता यह अध्ययन करना चाहता है कि युद्ध का प्रभाव व्यक्ति की मनोदशा पर क्या पड़ती है, तथा युद्ध छिड़ जाने पर उनके व्यवहारों में किस-किस तरह के परिवर्तन आते हैं, तो उसे स्वभावतः उस समय तक इन्तजार करना होगा जब तक कि युद्ध (war) प्रारम्भ न हो जाय और युद्ध कब प्रारम्भ होगा, इसका पूर्वानुमान चूँकि प्रेक्षक के बस की चीज नहीं है, इसलिए वह इस विधि द्वारा आँकड़े संग्रह करने का विचार छोड़ देता है और कोई दूसरी विधि की खोज में अग्रसर हो जाता है।

(iii) व्यक्ति के कुछ व्यवहार तथा कुछ घटना चक्र की प्रकृति ऐसी होती है कि उनका प्रेक्षण विधि (observation method) द्वारा अध्ययन नहीं किया जा सकता है। जैसे, पति-पत्नी के लैंगिक व्यवहार (sexual behaviour), व्यक्तिगत पारिवारिक घटनाएँ विशेषकर अप्रिय घटनाएँ तथा जीवन की ऐतिहासिक घटनाओं का प्रेक्षण विधि द्वारा अध्ययन नहीं किया जा सकता है।

(iv) अक्सर यह देखा गया है कि जब व्यक्तियों को यह पता चल जाता है कि उसके व्यवहार को कोई विशेष व्यक्ति प्रेक्षण (observation) कर अध्ययन कर रहा है तो वह अपना स्वाभाविक व्यवहार बदल देता है और कुछ अस्वाभाविक व्यवहार करना शुरू कर देता है। इस तरह के अस्वाभाविक व्यवहार के अध्ययन के बाद शोधकर्त्ता जिस निष्कर्ष पर पहुँचता है, वह निश्चित रूप से न तो विश्वसनीय और न ही वैध (valid) ही होता है।

(v) प्रेक्षण विधि में आत्मनिष्ठता (subjectivity) अधिक पाई जाती है। अन्य बातों के अलावा प्रेक्षण विधि प्रेक्षक (observer) के प्रत्यक्षण (perception), उद्देश्य (purpose) तथा ज्ञान (knowledge) द्वारा सीधे प्रभावित होती है। प्रेक्षण करते समय प्रेक्षक आँकड़ों (data) में यदि अपनी स्वेच्छा से या अपने पूर्वाग्रह (bias) के अनुकूल कुछ अनावश्यक जोड़-घटाव करना चाहे तो वे आसानी से कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रेक्षण विधि में आत्मनिष्ठ कारकों (subjective factors) का हाथ होने से उसके परिणाम की निर्भरता